

RAMAKRISHNA MISSION VIDYAMANDIRA

(Residential Autonomous College affiliated to University of Calcutta)

B.A./B.Sc. FIRST SEMESTER EXAMINATION, MARCH 2021

FIRST YEAR [BATCH 2020-23]

SANSKRIT (HONOURS)

Paper : I [CC 1]

Date : 24/03/2021

Time : 11.00 am - 1.00 pm

Full Marks : 50

1. यथेच्छम् एका टिप्पणी कार्या। [1×3]
क) यतिः।
ख) गणः।
2. यथेच्छम् द्वयोः सलक्षणम् उदाहरणं लेख्यम्। [2×3]
क) शालिनी।
ख) वंशस्थबिलम्।
ग) मालिनी।
घ) मन्दाक्रान्ता।
3. यथेच्छं द्वयोः छन्दः निर्णयम्। [2×3]
क) अर्थो हि कन्या परकीय एव
तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकाममं
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥
ख) प्रवर्ततां प्रकितहिताय पार्थिव
सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः
पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः॥
ग) एष त्वामभिनवकण्ठशोणितार्थी
शार्दूलः पशुमिव हन्मि चेष्टमानम्।
आर्तानां भयमपनेतुमात्तधन्वा
दुष्यन्तस्तव शरणं भवत्विदानीम्॥
घ) साक्षात् प्रियामुपगतामपहाय पूर्वं
चित्रार्पितां पुनरिमां बहुमन्यमानः।

स्रोतवहां पथि निकामजलामतीत्य
जातः सखे प्रणयवान् मृगतृष्णिकायाम्॥

4. यथेच्छमेकस्य भावसम्प्रसारणं कार्यम्।

[1×10]

- क) स्वभावो दूरतिक्रमः।
ख) दारिद्र्यदोषः गुणराशिनाशी।

अथवा

यथेच्छमेकं विषयम् अवलम्ब्य प्रबन्धः लिख्यताम्।

[1×10]

- क) स्वामी विवेकानन्दः।
ख) तव प्रियः कविः।

5. यथेच्छमेकः संस्कृतभाषया अनुवादः कार्यः।

[1×10]

- क) যেখানে মাঠের পাশে বন আছে, আর বনের ধারে মস্ত পাহাড় আছে, সেইখানের একটা গর্তের ভিতরে একটা ছাগলছানা থাকত। সে তখনও বড়ো হয়নি, তাই গর্তের বাইরে যেতে পেত না। বাইরে যেতে চাইলে তার মা বলত- যাসনে, ভালুকে ধরবে, বাঘে নিয়ে যাবে, সিংহে খেয়ে ফেলবে। তা শুনে তার ভয় হতো, আর সে চুপ করে গর্তের ভিতরে বসে থাকত। তারপর সে একটু বড়ো হলো, তার ভয়ও কমে গেল। তখন তার মা বাইরে চলে গেলেই সে গর্তের ভিতর থেকে উঁকি মেরে দেখত। শেষে একদিন একেবারে গর্তের বাইরে চলে এল।
- খ) শুনেই তো ভয়ে বাঘের প্রাণ উড়ে গিয়েছে। সে ভাবলে যে, নিশ্চয় শিয়াল তাকে ফাঁকি দিয়ে নরহরি দাসকে খেতে দেওয়ার জন্য এনেছে। তারপর সে কী আর সেখানে দাঁড়ায়, সে পাঁচিশ হাত লম্বা এক-এক লাফ দিয়ে শিয়ালকে নিয়ে পালান। শিয়াল মাটিতে আছাড় খেয়ে, কাঁটার আঁচড় খেয়ে, ক্ষেতের আলে ঠোঁকর খেয়ে একেবারে যায় আর কী, শিয়াল চেষ্টা করে বললে, মামা এল মামা এল। তা শুনে বাঘ ভাবে বুঝি সেই নরহরি দাস এল, তাই সে আরও বেশি করে ছোটো।

6. यथेच्छं पञ्चानां ससूत्रं कारकं विभक्तिश्च निर्णया।

[5×1]

- क) बालकः चन्द्रं पश्यति।
ख) रामः वनं गच्छति।
ग) ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति।
घ) गां दुग्धं दोग्धि।
ङ) रामेण वाणेन हतो वाली।
च) स मासेन व्याकरणम् अपठत्।

छ) बालकः दरिद्राय वस्त्रं ददाति।

ज) पादेन खञ्जः।

7. यथेच्छं पञ्चानां समासनाम विग्रहवाक्यं च लिखत।

[5×1]

क) दुर्भिक्षम्।

ख) कृष्णश्रितः।

ग) शङ्कुलाखण्डः।

घ) यूपदारु।

ङ) राजपुरुषः।

च) चोरभयम्।

छ) अनिष्टम्।

ज) कुम्भकारः।

ञ) पीताम्बरः।

8. यथेच्छं पञ्चानां सन्धिविच्छेदः कार्यः।

[5×1]

क) सुध्युपास्यः।

ख) नीलोत्पलम्।

ग) अद्यैव।

घ) चयनम्।

ङ) सन्नच्युतः।

च) उमेशः।

छ) ब्रह्मर्षिः।

ज) हरिश्चन्द्रः।

_____ x _____